मातृभूमि को समर्पित

उदयपुर का वैभव : झीलें एवं संस्कृति

संकलन,लेखन एवं प्रस्तुति

डॉ. एल.एल. धाकड़

सेवानिवृत्त प्रोफेसर, शस्य विज्ञान (कृषि) एवं निदेशक, प्रसार शिक्षा,

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

अस्वीकरण (DISCLAIMER)

इस पुस्तक में व्यक्त किये गये विचार, विवरण एवं तथ्य विस्तृत स्रोतों के गहन अध्ययन एवं इन स्थानों के भ्रमण उपरान्त संगृहीत की गई सामग्री पर आधारित हैं। सामग्री की सटीकता और यथार्थता के लिए वर्तमान एवं पूर्व चित्रों का सहयोग लेकर अथक प्रयास किये गये है, फिर भी त्रुटि रहना संभव है।

यह पुस्तक किसी विशेष उद्देश्य के लिए नहीं है। यह संकलन मेरी मातृभूमि को समर्पित है। ''उदयपुर का वैभव : झीलें एवं संस्कृति'' में झीलों की अनुपम धरोहर मानते हुए उनके सम्बन्ध में विस्तृत विवरण, वर्तमान रखरखाव, प्रदूषण के कारण एवं निवारण के साथ जल संसाधन से सम्बन्धित अन्य उपयोगी विवरण का भी समावेश किया गया है। इनके अतिरिक्त उदयपुर का गौरवमयी इतिहास, संस्कृति संरक्षण एवं प्राकृतिक सम्पदा, महत्वपूर्ण पर्यटक एवं दर्शनीय स्थलों का चित्रण भी पुस्तक की उपयोगिता के लिए किया गया है। इसी क्रम में उदयपुर के भावी विकास, संभावनाओं एवं सुझावों पर भी प्रकाश डाला गया है।

इस पुस्तक में दी गई सामग्री का उपयोग कानूनी मामलों को निपटाने के लिए नहीं किया जावे।

मुद्रण तिथि
23 अप्रैल, 2023 (अक्षय तृतीया)

मुद्रक
पी.एल. कम्प्यूटैक्स, उदयपुर
मूल्य: 3100/-

प्रकाशक

GMSL Dhakar Charitable Foundation

'Surya Dharshan', 73, Bhupalpura, K-Road,
Udaipur-313001, Rajasthan, India
Mob. +91-9828259538
E-mail : drlldhakar@gmail.com
Website : www.dhakarcharitablefoundation.org

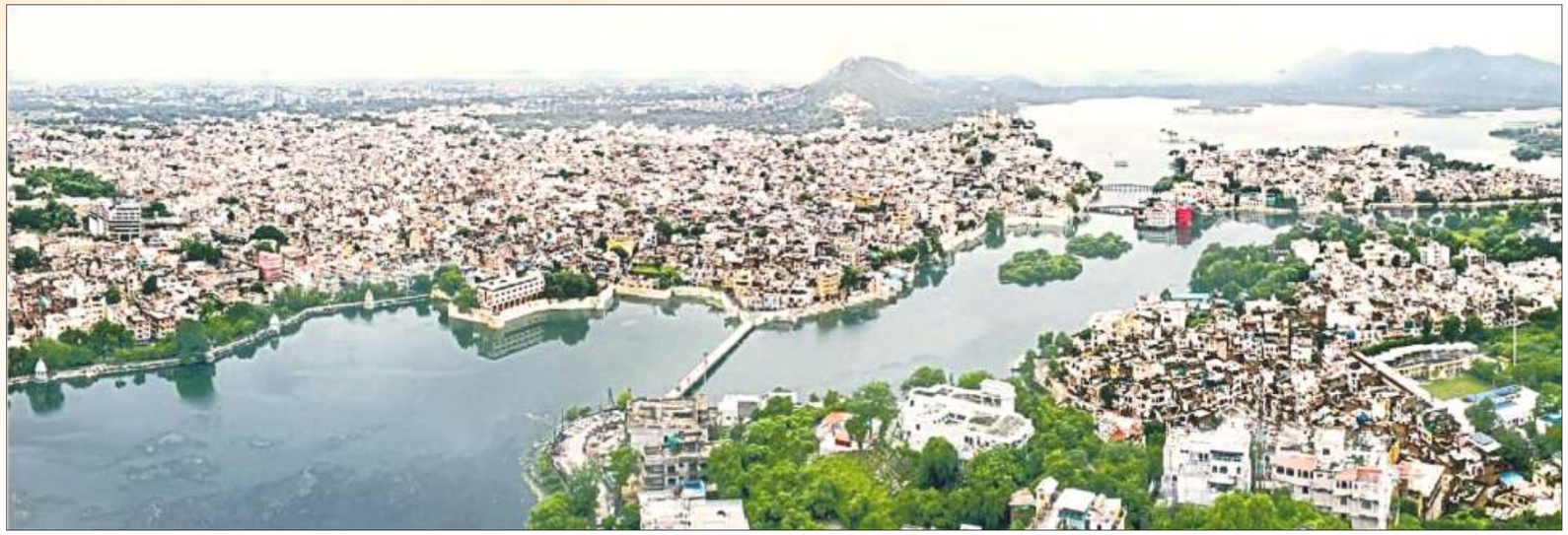

परमेश्वरजी महाराज, श्री एकलिंगजी महादेव कैलाशपुरी, उदयपुर, मेवाड़

मेवाड़ राज्य के संस्थापक बप्पा रावल ने 734 ईस्वी में हरित ऋषि की अनुमति से एकलिंगजी मन्दिर का निर्माण करवाया जिसका नामकरण ''कैलाशपुरी तीर्थ'' के रूप में किया गया। श्री एकलिंगजी की कृपा से बप्पा रावल को मेवाड़ राज्य मिला। वे ऐसे दृढ़ भक्त थे कि उन्होंने अपना संपूर्ण राज्य एकलिंगजी के श्रीचरणों में रख दिया एवं उन्हें अपना ईष्टदेव मानते हुए अपने शासक के रूप में स्वीकार कर लिया तथा स्वयं को उनका प्रतिनिधि मानते हुए राज्य के शासन का संचालन किया और इसी के दीवान कहलाये। तत्पश्चात् सभी महाराणाओं ने इस परम्परा का उसी श्रद्धा एवं विश्वास के साथ अक्षरशः पालन किया।

श्री एकलिंगजी आराध्यदेव भगवान शिव के रूप में विराजित है। यहाँ पर स्थित शिवलिंग की मूर्ति के चारों ओर मुख बने हुए हैं। मंदिर परिसर में 108 देवी-देवताओं के छोटे-छोटे मंदिर स्थित हैं।

।। ऊँ नमः शिवाय ।।

मेरी मातृभूमि को समर्पित ...

राजस्थान एवं मेवाड़ का गौरव उदयपुर त्याग, शौर्य, शक्ति एवं भक्ति के लिए विश्व–प्रसिद्ध है, वहीं यह झीलों की नगरी के रूप में भी विख्यात है। इस गौरवमय एवं प्राकृतिक रूप से समृद्ध शहर में मेरा जन्म हुआ, इस मातृभूमि को मेरा श्रद्धापूर्ण नमन। मैं कृतज्ञ हूँ, उसका मेरे ऊपर बहुत ऋण है जिसे कभी भी चुकाया नहीं जा सकता है। इस पुस्तक के माध्यम से इस बहुरंगी शहर के वैभवशाली, ऐतिहासिक एवं विरासत में मिली सौगातों विशेषकर झीलों को चित्रित करने का मेरा यह एक लघु प्रयास है, अतः यह पुस्तक सर्वप्रथम अपनी मातृभूमि विशेषकर श्री एकलिंगनाथ जी को समर्पित कर रहा हूँ। मातृभूमि की रक्षार्थ बलिदान, समर्पण, पुरुषार्थ, दृढ़निष्ठा एवं शौर्य की अनुपम मिसाल महाराणा प्रताप के पिता एवं पन्नाधाय द्वारा रक्षित महाराणा उदयसिंह के शासनकाल में लगातार मुगलों के आक्रमणों से सुरक्षित स्थान पर मेवाड़ की राजधानी स्थानान्तरित किये जाने की योजना के तहत उदयपुर नगर की स्थापना हुई। महाराणा उदयसिंह ने पिछोला झील के पूर्वी किनारे पर सामरिक उत्तर–दक्षिण दिशा वाली राणा मगरी को अपने महल तथा उसके इर्द–गिर्द गिर्वा घाटी को नगर के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना। गिर्वा घाटी के भू–भाग का लाभ यहाँ प्रत्यक्ष रूप से दृष्टव्य है, क्योंकि यहाँ उत्तर (चीरवा घाट), पूर्व (देबारी किलेबन्दी) तथा दक्षिण (केवड़ा की नाल) के भली–भांति सुरक्षित मार्गों से ही प्रवेश किया जा सकता था। पश्चिम की ओर अरावली पर्वत–श्रृंखला सुरक्षा प्रदान करती थी। इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र की उन प्राकृतिक विशेषताओं को ध्यान में रखा गया जिनसे आकर्षित होकर यहाँ पूर्व ऐतिहासिक काल में आयड़ (आहाड़) सभ्यता पनपी और कालान्तर में व्यापारिक नगरी आयड़ का विकास हुआ।

अण्डाकार रंगभूमि गिर्वा घाटी (लगभग 20 कि.मी. × 15 कि.मी.) जिसमें उदयपुर की स्थापना हुई, की लम्बी भुजा उत्तर–पश्चिम से दक्षिण–पूर्व की ओर 24°40′ – 24°34′ उत्तरी अक्षांश 73°39′ – 73°45′ पूर्वी देशान्तर के मध्य फैली हुई है। यह ऊँची–नीची लेकिन उर्वर भूमि समुद्र तल से लगभग 670 से 850 मीटर तक ऊँची और सघन वनाच्छादित अविच्छिन्न पर्वत श्रृंखला से आवृत्त है। आयड़ और बेड़च के रूप में दो स्थायी जल स्रोत इसका पोषण करते हैं। अरावली पर्वत श्रृंखला के पूर्वी पार्श्व में स्थित सामरिक महत्व की यह गिर्वा घाटी प्राकृतिक सुरक्षा व्यवस्था से सम्पन्न है, जिसने मानव के रहने के लिए इसे आदर्श स्थल बना दिया है। गिर्वा घाटी के पश्चिम में घने जंगलों से युक्त अरावली पर्वत श्रृंखला है, तो पूर्व में 100 कि.मी. चौड़ा मेवाड़ का मैदान भरपूर खाद्यान्न एवं अन्य कृषि उत्पाद के लिए उपयुक्त है, जिसके पीछे चित्तौड़गढ़ से ही विन्ध्य पठार श्रृंखला स्थित है।

महाराणा उदयसिंह ने उदयपुर में मेवाड़ की राजधानी स्थापित करने से पूर्व एक बड़े पक्के बाँध का निर्माण करवाया जो उनके नाम पर ''उदयसागर'' के रूप में जाना गया। इस झील से अतिरिक्त जल संसाधन मुहैया करवाने के साथ ही एक और अधिक महत्वपूर्ण कार्य यह किया गया कि इससे गिर्वा घाटी की ओर खुलने वाले इकलौते समतल मैदान को प्रभावशाली ढंग से अवरुद्ध कर दिया गया। गिर्वा घाटी के अन्य प्रवेश बिन्दु पहाड़ी दर्रों से होकर गुजरते हैं, जैसे चीरवा एवं देबारी घाट के द्वार। पिछोला झील के कच्चे बाँध का निर्माण उदयपुर की स्थापना से पूर्व एक घूमन्तु बन्जारे द्वारा किया गया। उदयपुर के निर्माण की पहली दो शताब्दियों के दौरान शहर में पानी की बढ़ी हुई जरूरतें पहले से विद्यमान पिछोला झील पर बड़ी पाल का निर्माण कर बड़ी झील के रूप में परिवर्तित करके बावड़ियों के माध्यम से पूरी की गयी। बाद में पिछोला की क्षमता चार अतिरिक्त जल स्रोतों अमरकुण्ड, रंगसागर, कुम्हारिया तालाब तथा स्वरूप सागर का निर्माण करके और बढ़ायी गयी। पिछोला के अतिरिक्त देवाली, बड़ी, दूधतलाई, गोवर्द्धन सागर एवं उदयपुर से दूर जयसमन्द एवं राजसमन्द झील का भी निर्माण हुआ। देवाली तालाब के छोटे बांध को फतहसागर के विशालकाय पक्के बांध के रूप में परिवर्धित कराया। मदार प्रथम एवं मदार द्वितीय का निर्माण कराकर नहर के माध्यम से फतहसागर में पानी की आवक बढ़ाई गयी।

ये झीलें उदयपुर की शान हैं। जब ये झीलें लबालब भर जाती हैं तो उदयपुर शहर के पर्यटन स्थलों का दृश्य अत्यन्त मनोहारी बन जाता है तथा पर्यटक एवं शहरवासियों में खुशी की लहर छा जाती है। ऐसी जन्मभूमि को मेरा नमन एवं वन्दन।

– एल.एल. धाकड़

चौबीसवे तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी

तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य श्री भिक्षु

गणाधिपति आचार्य तुलसी

आचार्य श्री महाप्रज्ञ

श्रद्धा नमन – पूज्य चरण

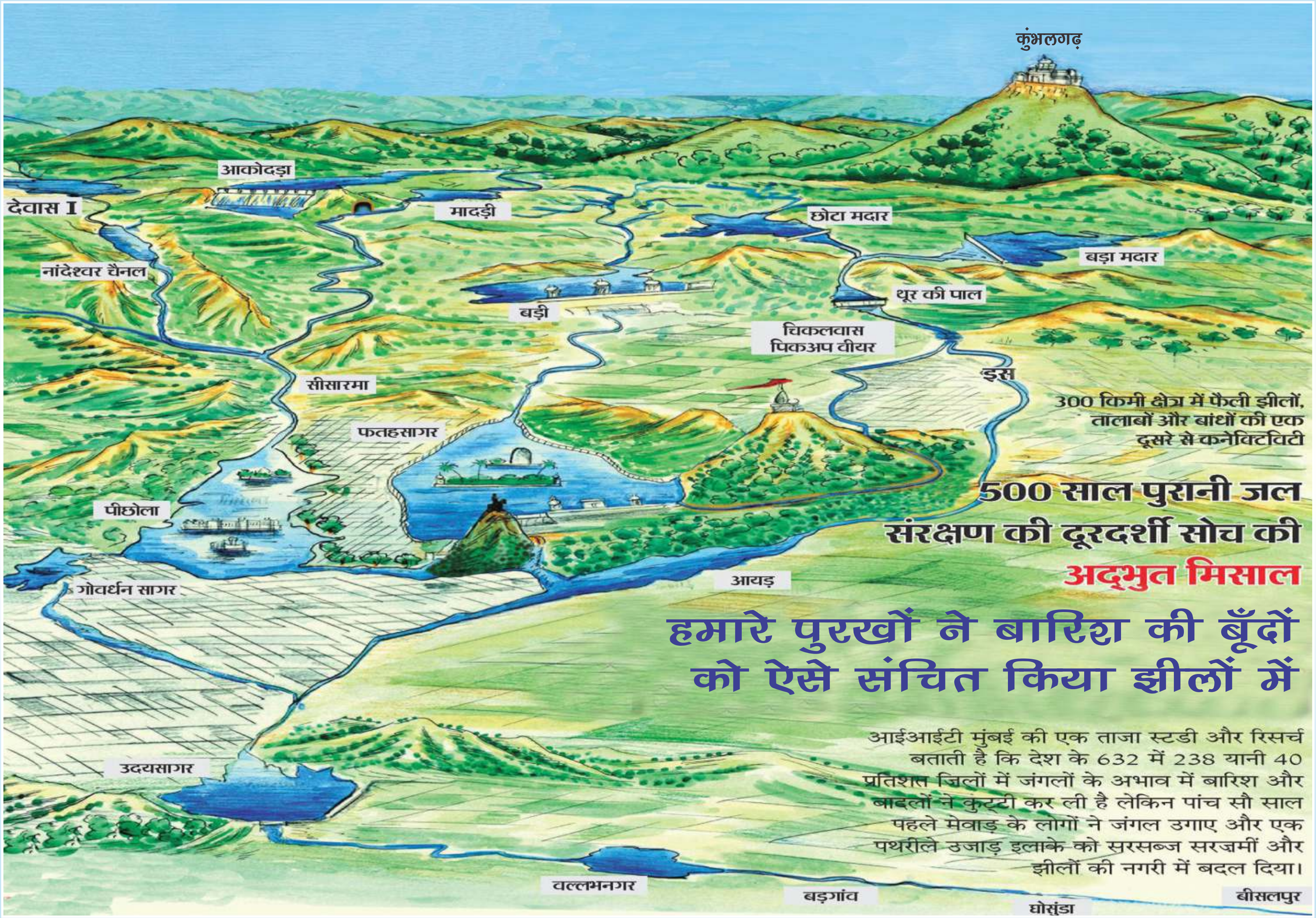

300 किमी क्षेत्र में फैली झीलों, तालाबों और बांधों की एक दूसरे से कनेक्टिविटी

500 साल पुरानी जल संरक्षण की दूरदर्शी सोच की अद्‌भुत मिसाल

हमारे पुरखों ने बारिश की बूँदों को ऐसे संचित किया झीलों में

आईआईटी मुंबई की एक ताजा स्टडी और रिसर्च बताती है कि देश के 632 में 238 यानी 40 प्रतिशत जिलों में जंगलों के अभाव में बारिश और बादलों ने कुट्टी कर ली है लेकिन पांच सौ साल पहले मेवाड़ के लोगों ने जंगल उगाए और एक पथरीले उजाड़ इलाके को सरसब्ज सरज़मीं और झीलों की नगरी में बदल दिया।

श्रद्धेय गुरुवर

अहिंसा यात्रा – सद्भावना, नैतिकता एवं नशा मुक्ति अभियान के प्रणेता

परम् श्रद्धेय युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी

गणमान्य युगपुरुष

स्वच्छता, स्वच्छ पेयजल एवं जल स्रोत संरक्षण अभियान के अग्रदूत

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदरदास जी मोदी

वात्सल्य, सादगी, ईमानदारी एवं अनुशासनपूर्ण जीवन के धनी : मेरे प्रेरणापुंज

स्व. श्री मोहनलाल जी धाकड़
(पिताश्री)

स्व. श्री धनराज जी धाकड़
(दादाश्री)

स्व. श्रीमती गोपी बाई धाकड़
(माताश्री)

अभिव्यक्ति एवं भावांजली

सुन्दर झीलों के कारण ही उदयपुर शहर की विश्व के सुन्दरतम् शहरों में विशेष पहचान बनी है। अरावली पर्वतमाला की छोटी–बड़ी वादियों में फैले हुए इस नगर के पश्चिमी भाग में शहर की प्रमुख झीलें पिछोला, अमरकुण्ड, रंगसागर, कुम्हारिया तालाब, स्वरूप सागर, दूध तलाई, गोवर्द्धन सागर, फतहसागर एवं उपला तालाब स्थित हैं। भौगोलिक स्थिति के आधार पर ये सभी झीलें ऊपरी बेड़च बेसिन में है। इस बेसिन का उद्‌गम गोगुन्दा की पहाड़ियों में झरनों और जामुनिया नाले से होता है किन्तु नदी का स्वरूप छोटे व बड़े मदार तालाब से उभरता है। मदार से यह नदी आयड़ के नाम से दक्षिण–पूर्व की ओर बहती है। इसमें कई नालों के अतिरिक्त सीसारमा नदी का जल प्रवाह पिछोला व फतहसागर का ओवरफ्लो होता हुआ गुमानियावाला नाले से आयड़ नदी में मिलता है। बेड़च बेसिन में नदियों व झीलों का यह तंत्र हमें विरासत में मिला है। यह दुनिया का प्रथम तन्त्र है जहाँ जल दिशा परिवर्तन का प्रयोग किया गया था। आयड़ नदी के पूर्व एवं पश्चिम की ओर अनेक छोटी झीलें स्थित हैं, जिनका महत्त्व उनके आवाह क्षेत्र के आस–पास के बाढ़ नियंत्रण, भू–भागों में भू–जल स्तर बढ़ाने से है। इसके साथ ही इन झीलों में अनेक पक्षी और जलीय जीव विचरण करते हैं। इसके अतिरिक्त बड़ी तालाब, छोटा मदार व बड़ा मदार ऊपरीय झीलें एवं उदयसागर अनुप्रवाह झील के रूप में उदयपुर झील संकुल में अवस्थित है।

उदयपुर के प्रबुद्ध जन समुदाय अपनी जिम्मेदारी को दरकिनार करते हुए हर समस्या के समाधान के लिए सरकार की ओर ताकने लग जाता हैं। कुछ का मानना है कि ''जिन्दगी के सौ दिन है, इज्जत से निकल जाएं। बस यही सोच अच्छे विचारशील लोगों को अपने विचारों की अभिव्यक्ति नहीं करने देती है। लेकिन मेरे विचार में उदयपुर का प्रत्येक शख्स जब तक खुद को अपने शहर का ''स्टेक होल्डर'' नहीं मानेगा और दिल से यह नहीं कहेगा कि यह शहर मेरा है, तब तक शहर को विरासत में मिली झीलों का रंग चमकदार नहीं रह पाएगा। आज वह समय आ गया है, जब शहर का हर नागरिक खड़ा होकर कहें कि ये झीलें मेरी हैं और इनके विकास, साफ–सफाई एवं प्रदूषण मुक्त रखने के हर कदम में उसे सक्रिय भागीदारी निभाने का अवसर मिलना चाहिये। वर्तमान में चंद लोग शहर की इन झीलों के स्वरूप को निर्धारित करते हैं, बाद में खामियों का खामियाजा इस शहर की वर्तमान एवं भावी पीढ़ियाँ भुगतती हैं। एक सजग नागरिक होने के नाते मेरा इस पुस्तक के माध्यम से शहर के जनमानस को एकजुट होकर सकारात्मक सोच के साथ आवाज़ उठाने के लिए प्रेरित करना है, इस सोच को जागृत करना होगा। जो ऐसा नहीं करते, उन्हें समस्याओं पर चिल्लाने का भी हक नहीं है। नहीं जगे तो झीलें मरेगी, शहर मर जाएगा।

हमारे पास पिछोला, अमरकुण्ड, दूध तलाई, गोवर्द्धन सागर, कुम्हारिया तालाब, रंग सागर, स्वरूप सागर, फतहसागर एवं उपला तालाब नाम की मुख्य झीलें, जो एक–दूसरे से जुड़ी हुई हैं। इसके अतिरिक्त उदयसागर, जयसमन्द, राजसमन्द जैसे जल संग्रहण तंत्रों के आकार समृद्धि के द्योतक हैं। हमने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद क्या किया, किसी तालाब की सीमा तो बढ़ाई नहीं, उनकी क्षमता बढ़ाने की सोची नहीं, हाँ क्षमता कम जरूर की है। नई पीढ़ी को क्या पता कि उदयसागर का पानी ठोकर तक टकराता था। उदयसागर एवं पिछोला को काटकर छोटे कर दिये। जयसमन्द की भी जल क्षमता को कम कर दिया। राजसमन्द को भरने वाले नदी–नालों में स्लरी और मार्बल के टुकड़े ड़ाल दिये जिससे उसमें पानी नहीं पहुंचता। अतिक्रमणों को रोकने का कार्य नहीं होता। अब तक जो सुरक्षित बचा, उस पर भी कब्जा करने का प्रयास होता रहता है। झीलों में पर्याप्त जल–जीवों के साथ निर्मल जल से पैंदा नजर आता था, वहीं जल अब गन्दगी युक्त, प्रदूषित, जलीय घास, जलकुम्भी एवं काई के फैलाव के साथ देखा जा सकता है।

दुनिया में कई देश हैं, जहां उदयपुर जैसे शहर हैं। उन्होंने भरपूर विकास किया है। उनकी खूबसूरती घटी नहीं, बढ़ी है। हरियाली की सघनता कम नहीं हुई, बढ़ी है। लेकिन हमारे आस–पास अब हरियाली भी कट चुकी है, पहाड़ काटे जा रहे हैं, नाले पाटे जा रहे हैं, नदियों में अवरोध खड़े किये जा रहे हैं। फव्वारें लगा देने, रोप–वे बना देने, पेटे में सड़क बना देने, पार्क बना देने जैसे विचारों एवं कार्यों से शहर नहीं बनता। झील किनारे पहले चाट–पकौड़ी, आईसक्रीम विक्रेताओं की संख्या बढ़ती रही, अब शिफ्टिंग की बात कर रहे हैं। छोटे तालाब अतिक्रमण ग्रस्त है एवं कुछ लुप्त प्राय हो चुके हैं। शहर की लाइफ लाइन आयड़ नदी सीवरेज एवं गन्दगी से अटी पड़ी है। आयड़ के विकास हेतु यदि छोटे–छोटे कदम भी उठाये जाते तो आज वह सिंगापुर की सिंगापुर रिवर एवं अहमदाबाद की साबरमती नदी जैसी दिखाई देती। इसके लिए दूरगामी सोच की जरूरत है। विकास ऐसा हो जो बरसों बाद भी याद रखा जाए, स्थायी रह सके एवं भावी पीढ़ियाँ इससे लाभान्वित हो सकें।

मेवाड़ मन्दिरों का भी धनी है। आजादी के बाद उन मन्दिरों की दशा सभी जानते हैं। विकास के नाम पर उनकी जमीनें अवाप्त कर ली गई या बेच दी गई। कई जमीनें कब्जे हो गई लेकिन किसी को इसकी चिंता नहीं है। मन्दिरों का प्रबन्धन सही करे, प्रतिमाओं को मात्र पत्थर की मूर्ति न समझे। ये पर्यटन स्थल हमारी संस्कृति को दूर–दूर तक पहुँचाते हुए आय का स्रोत बन सकते हैं और इससे गरीब जनता का भला भी किया जा सकता है। उदयपुर शहर सुन्दर घाटों एवं मन्दिरों के शहर के नाम से भी विख्यात है। शहर को विरासत में मिले दर्शनीय शहरकोट एवं दरवाजों को हम सहेजकर अपने मूल स्वरूप में नहीं रख पाए, क्यों? आज ये व्यवस्थित होते, पर्यटक उस पर भ्रमण कर, शहर की झीलों एवं ऐतिहासिक स्थलों का दृश्यावलोकन करते, भाव–विभोर होते और उदयपुर शहर का विरासत संरक्षण में दुनिया में नाम होता। इसी प्रकार शहर के चारों ओर शहरकोट के बाहर शहर सुरक्षा के लिए निर्मित किले, गढ़ को भी मूल स्वरूप में नहीं रख पाये। कहीं स्कूल हैं तो कहीं पुलिस विभाग के पास है। इन्हें संरक्षित रखते तो आज ये पर्यटकों के लिए दर्शनीय एवं लोकप्रिय स्थल होते।

मेरी जन्मभूमि उदयपुर शहर को विरासत में मिली '**झीलों**' यानी '**शहर की आत्मा**' को स्वच्छ, सुन्दर और इनके आध्यात्मिक मूल स्वरूप एवं **सांस्कृतिक वैभव** को पुनः स्थापित करने एवं जन–जागृति के उद्देश्य से यह संकलन पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है। सैंकड़ों चित्रों के साथ जानकारी को अधिक पठनीय एवं रोचक बनाने का भी पूरा प्रयास रहा है। इस कार्य में मेरी धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तला धाकड़ का अतुलनीय योगदान रहा। सभी परिस्थितियों में वह मेरी प्रेरणास्रोत बनी रही। इसके अतिरिक्त श्री विपिन जी–श्रीमती मीतू कावड़िया एवं श्री अरूण जी–श्रीमती नीतू सरूपरिया (कँवर साहब एवं पुत्री) का सहयोग एवं प्रोत्साहन मिलता रहा। मेरे विशिष्ट मित्र स्व. डॉ. के. एल. मेनारिया, सम्पादन विशेषज्ञ श्री प्रकाश जी तातेड़ एवं टंकन एवं ग्राफिक विशेषज्ञ श्री भेरूलाल तेली का अथक सहयोग मिला, उसका शब्दों से मूल्यांकन करना संभव नहीं है। इस वृहद् संकलन में त्रुटियाँ रहना भी संभावित हैं। कृपया इस पुस्तक में संकलित सामग्री को किसी भी कोर्ट–कचहरी में एविडेन्स के रूप में उपयोग नहीं ली जावे क्योंकि यह मात्र एक संकलन है, इसकी सभी सूचनाएँ विविध स्रोतों से ली गई हैं। हालांकि उनकी प्रमाणिकता का भी पूरा ध्यान रखा गया है। जनसामान्य एवं विशेषज्ञों की झीलों के प्रति जागरूकता, लगाव एवं रखरखाव में उनकी भागीदारी, सहयोग में वृद्धि करने एवं अपने विचारों को शब्दों में पिरोकर उच्च प्रशासनिक अधिकारियों, राजनेताओं, सामाजिक एवं राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं आदि तक पहुँचाने का प्रयास करने के उद्देश्य से संकलनकर्त्ता की ओर से अपनी मातृभूमि को यह एक छोटी–सी भेंट है।

यह पुस्तक अपने धर्मगुरु परम श्रद्धेय युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी को उनकी अहिंसा यात्रा एवं इसके उद्देश्य, सद्‌भावना, नैतिकता एवं नशा–मुक्ति अभियान तथा युगपुरुष माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदरदास जी मोदी के स्वच्छ भारत मिशन, नदियों से नदियों को जोड़कर वर्ष 2024 तक देश के प्रत्येक घर में शुद्ध पेयजल पहुँचाने की योजना तथा मेरे दादाश्री स्व. श्री धनराज जी धाकड़, पिताश्री स्व. श्री मोहनलाल जी धाकड़ एवं माताश्री स्व. श्रीमती गोपी बाई धाकड़ के स्नेहिल वात्सल्य, अनुशासन एवं ईमानदारी की सीख, जो मुझे विरासत में मिली तथा विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्ति पश्चात् आध्यात्मिक एवं सामाजिक सेवा के क्षेत्र में मेरे बड़े भ्राता श्री भँवरलालजी एवं श्री नन्दलालजी की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के साथ एक सक्रिय समाजसेवी एवं दानवीर स्व. श्री विजय कुमार जी सुराणा की वास्तविक जिन्दगी से प्रेरित होकर पिछले 18 वर्षों से इसी क्षेत्र को अंगीकार करते हुए विभिन्न धार्मिक एवं समाजसेवी संस्थाओं के माध्यम से जनमानस की निरन्तर सेवा का पूर्ण प्रयास करते हुए यह संकलन समर्पित है।

अन्त में, इस संकलन को व्यवस्थित एवं पूर्ण रूप प्रदान करने में अनेक विषय विशेषज्ञ व्यक्तियों, संस्थाओं, पुस्तकालयों, समाचार पत्रों, शोध–पत्रों से जो बहुमूल्य लेखन सामग्री प्राप्त हुई, उन सभी का मैं अन्तर्मन से आभार एवं धन्यवाद अभिव्यक्त करता हूँ।

एल.एल. धाकड़

इस पुस्तक में .....

"उदयपुर का वैभव : झीलें एवं संस्कृति"

भौगोलिक दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य राजस्थान अपने बहुरंगी भौतिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप से विश्वविख्यात है। इसी राज्य के दक्षिण में अरावली पर्वतमालाओं के मध्य स्थित उदयपुर शहर अपनी ऐतिहासिक विरासत, नैसर्गिक सुन्दरता एवं सांस्कृतिक वैभव से विश्व के श्रेष्ठतम् शहरों की गणना में सूचीबद्ध है।

वर्तमान उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा एवं राजसमन्द जिले के संयुक्त भू–भाग को प्राचीनकाल में 'मेवाड़' कहा जाता था। 'मेवाड़' शब्द के साथ इस क्षेत्र का गौरवशाली अतीत एवं विपुल सांस्कृतिक परिदृश्य जुड़ा हुआ है। महाराणा उदय सिंह ने 15 अप्रेल, 1553 अक्षय तृतीया को उदयपुर नगर की स्थापना की। महाराणा उदय सिंह के सुपुत्र महाराणा प्रताप सिंह अपने स्वाभिमान व आजादी के लिए विश्व में वन्दनीय है। इसी वंश परम्परा में महाराणा जगत सिंह, महाराणा राज सिंह, महाराणा स्वरूप सिंह, महाराणा फतह सिंह एवं महाराणा भोपाल सिंह ने यहां झीलों के रखरखाव एवं विकास के साथ स्थापत्य कला व शिल्प कला के अद्‌भुत महल, भवन व स्थल निर्मित करवाये, जिनमें से सिटी पैलेस, सहेलियों की बाड़ी, गुलाब बाग, जगदीश मन्दिर, गणगौर घाट, जग मन्दिर, जग निवास, सज्जनगढ़ जैसे अनेक सुरम्य स्थल पर्यटकों के लिए आज भी दर्शनीय बने हुए हैं।

ज्ञातव्य है कि उदयपुर शहर का भौगोलिक, प्राकृतिक एवं आर्थिक आधार यहां का झील तंत्र है, इसीलिए इस शहर को 'लेकसिटी' या 'झीलों की नगरी' से भी संबोधित किया जाता है। यह पुस्तक एक एलबम है जिसमें उदयपुर शहर एवं समीपवर्ती झीलों का सांगोपांग सचित्र वर्णन समाहित है। यह विशाल कृति उदयपुर के इतिहास, भूगोल, नागरिकों, पर्यटन स्थलों, त्यौहारों के साथ शहर की वर्तमान समस्याओं का सटीक एवं निष्पक्ष विवेचन करते हुए उनके समाधान का मार्ग भी सुझाती है। यह एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जो यहाँ की गौरवशाली विरासत की चमक दमक को समूचे संसार में फैलाने में सक्षम हो सकता है।

यह प्रकाशन 16.6 X 11.7 आकार में करीब 500 पृष्ठों में हजारों चित्रों से सुसज्जित होकर कुल 17 अध्यायों में विभाजित है। इनके शीर्षक ही इनमें निहित विषय–वस्तु का सहज आभास कराते हैं, जो इस प्रकार है :–

(1) झीलों का परिदृश्य **(2)** उपग्रह से – उदयपुर शहर की प्रमुख झीलें, सरोवर–भगवान की क्रीड़ा–स्थली **(3)** उदयपुर की शान **(4)** पिछोला झील तंत्र : पिछोला, अमरकुण्ड, कुम्हारिया तालाब, रंग सागर, स्वरूप सागर : समीक्षा एवं सुझाव, दूध तलाई, गोवर्द्धन सागर, नान्देश्वर तालाब, सीसारमा नदी **(5)** फतहसागर झील तंत्र : फतहसागर की शान–छोटी तलाइयाँ, उपला तालाब, छोटी तलाई, निचली तलाई, दर्शनीय स्थल, प्रदूषण एवं अन्य पठनीय सामग्री, बड़ी तालाब, मदार बड़ा एवं मदार छोटा तालाब, **(6)** उदयपुर शहर के अन्य महत्वपूर्ण जलाशय **(7)** उदयपुर शहर की जीवन रेखा – आयड़ नदी **(8)** उदयसागर झील **(9)** जयसमन्द झील **(10)** राजसमन्द झील एवं अन्य महत्वपूर्ण जल स्रोत **(11)** जल स्रोतों का विकास **(12)** वर्षा जल संग्रह : आज की आवश्यकता **(13)** उदयपुर की वर्तमान एवं भावी पेयजल परियोजनाएँ **(14)** उदयपुर संभाग की नम–भूमियाँ, पारिस्थितिकी एवं पक्षियों का कलरव **(15)** उदयपुर की झीलें : समस्याएँ तथा संरक्षण के पर्यावरणीय समाधान **(16)** उदयपुर गौरवमयी इतिहास, संस्कृति संरक्षण एवं प्राकृतिक सम्पदा का धनी, झीलों के घाटों पर धार्मिक त्यौहार एवं उत्सव **(17)** उदयपुर का विकास, संभावनाएँ एवं सुझाव, वाटर स्पोर्ट्स एवं एडवेन्चर ट्यूरिज्म।

प्रत्येक अध्याय में शीर्षक के अनुरूप संकलित सामग्री में ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, शिल्प कला, क्षेत्रफल, तथ्यात्मक जानकारी, उपयोगिता, वर्तमान स्थिति की समीक्षा के साथ सुधार हेतु आवश्यक सुझावों का सटीक वर्णन किया गया है। साथ ही रंगीन विशाल चित्रों से इसे बोधगम्य एवं प्रामाणिक बनाने का प्रयास किया गया है। गूगल इन्टरनेट व ड्रोन फोटोग्राफी के चित्रों का भी यथोचित उपयोग किया गया है।

इन अध्यायों में जलाशयों, महलों, उद्यानों के रखरखाव व उन्नयन हेतु व्यावहारिक समाधान भी दिए गए हैं। उदयपुर की जीवन रेखा आयड़ नदी अध्याय में विश्व व देश की प्रमुख नदियों के प्रदूषण मुक्ति अभियान के अन्तर्गत अहमदाबाद के साबरमती रिवरफ्रन्ट व विदेशों के अनेक सचित्र उदाहरण देकर शहर की आयड़ नदी का वैसा ही विकास करने की ओर स्थानीय जनमानस, प्रशासन, राज्य व केन्द्र सरकार को प्रेरित किया गया है।

उदयपुर का विकास, संभावनाएँ एवं सुझाव अध्याय के अन्तर्गत शहर की सफाई व्यवस्था, सड़क मार्ग, जलापूर्ति, विद्युत पोल, ट्रेफिक जाम, प्रदूषण, सीवरेज लाइन जैसे ज्वलन्त बिन्दुओं का विवेचन व समाधान का सार्थक आंकलन किया गया है। झीलों से संबंधित अध्याय में उनके भावी विकास के लिए मत्स्य पालन, खरपतवार उन्मूलन, पक्षी प्रवास, वाटर स्पोर्ट्स जैसे अनेक विषयों का विस्तृत वर्णन करने के साथ उन्हें उदयपुर के लिए कब, कहां, कैसे काम में लेना उचित होगा, इसका पूरा–पूरा मार्गदर्शन किया गया है।

सार रूप में कहा जा सकता है कि यह एक ऐसा संकलन है जिसमें उदयपुर नगर के हर पक्ष को उसके समग्र रूप में पूर्णता के साथ प्रस्तुत किया गया है। अनेक स्थानों पर विद्वानों के आलेख, विचार एवं टिप्पणियाँ भी सम्मिलित की गई हैं। यह किसी एक विषय की पुस्तक नहीं है बल्कि उदयपुर नगर को केन्द्र में रखकर बहुआयामी चिंतन–मंथन से उत्पन्न वह नवनीत है जो रसास्वादन के साथ इस धरोहर को भावी पीढ़ी के हाथों में सौंपने की एक सकारात्मक कोशिश है। संक्षेप में कहें तो इसमें उदयपुर नगर का भूत, वर्तमान और भविष्य समाहित है।

आशा है इस पुस्तक का उपयोग भविष्य में एक सन्दर्भ ग्रंथ के रूप में शोध कार्यों एवं विकास कार्यों की योजना निर्माण हेतु किया जा सकेगा। यह प्रकाशन उदयपुर वासियों के साथ–साथ मेवाड़ की माटी से जुड़े हर जागरूक नागरिक के मन की अनुगूंज है, पुकार है, कहीं अपील है तो कहीं आह्‌वान भी।

सुन्दर सुरुचिपूर्ण रंगीन चित्रों से सुसज्जित यह पुस्तक उदयपुर नगर का आईना है। यह संकलन कार्य सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की भावना के साथ तन, मन व धन के समर्पण से सम्पन्न हुआ है।

झीलों की पुकार

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् उदयपुर शहर को ऐतिहासिक, सुन्दर, स्वच्छ, जल संरक्षण एवं दिशा परिवर्तन की अनुपम कृतियाँ – पिछोला, अमरकुण्ड, दूधतलाई, गोवर्द्धन सागर, कुम्हारिया तालाब, रंग सागर, स्वरूप सागर, फतह सागर, उपला तालाब, रूप सागर, बड़ी तालाब, छोटा एवं बड़ा मदार तालाब, उदय सागर, जयसमन्द, राजसमन्द आदि झीलें हमें विरासत में मिली, जो हमारी अतुलनीय अनुपम धरोहर हैं।

इन झीलों के समुचित रखरखाव, सफाई व्यवस्था, सीवरेज निस्तारण एवं प्रबन्धन, सुन्दर कृतियों व उद्यानों का निर्माण, फव्वारों की स्थापना, रिंग रोड़, सड़कों का विस्तार व डामरीकरण तथा अतिरिक्त जल संसाधन तंत्र का निर्माण आदि कार्यों पर नगर निगम, नगर विकास प्रन्यास, राष्ट्रीय झील संरक्षण परियोजना एवं राज्य सरकार द्वारा करोड़ों रुपये खर्च किये गये हैं।

इन पर हम सब गर्व कर सकते हैं, लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इन झीलों में गन्दगी अपनी चरम स्थिति पर हैं। सफाई व्यवस्था बेहाल है। जलकुम्भी, जलीय खरपतवार एवं काई फैलती जा रही हैं। झीलें अतिक्रमण से सिकुड़ती जा रही हैं। देशी व प्रवासी पक्षियों का रूख दूसरी झीलों की ओर आकर्षित हो रहा है। नौकायन अव्यवस्थित है। वाटर स्पोर्ट्स पर अभी तक ध्यान नहीं दिया गया हैं। ऐसे माहौल में सवाल उठता है कि आज झीलों की सबसे बड़ी जरूरत क्या है? उत्तर है – विजन। एक बड़ी दूरदृष्टि रखी जाये, एक बड़ा सपना देखा जाये और उसे साकार करने के लिए एक कारगर दूरगामी सर्वांगीण योजना बने और फिर हम सब मिलकर सरकार एवं स्थानीय संस्थाओं की मदद से उस सपने को साकार करें। अभी हो यह रहा है कि हम बहुत आगे की नहीं सोच रहे हैं और राज्य सरकार एवं स्थानीय प्रशासन की सोच पंचवर्षीय एवं इससे भी छोटी अवधि की हो गयी है।

आज हमारी भावना यह बन गई है कि जो करेगी, सरकार करेगी, इस परजीवी सोच को बदलना होगा। हम सबको झीलों को सुन्दर, स्वच्छ, दुनिया की बेमिसाल कृतियाँ बनाने के लिए पूर्ण समर्पित भावना से सहयोग करना होगा। निजी स्वार्थ के क्षण, अप्रमाणिक हक एवं अतिक्रमण को त्यागना होगा। हम मिल बैठकर तय करें। आइए, नई सोच की शुरुआत करें।